

आत्मनिर्भरता : रोजगार के अवसर

पराधीनता अभिशाप है तो आत्मनिर्भरता वरदान। आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रभावी निर्देशन की आवश्यकता है। जिससे रोजगार के अवसरों की जानकारी आदि मिले। आज के युग में स्वावलम्बन की ओर अग्रसर होने की जरूरत है।

“पराधीन सपनेहु सुख नहीं।” पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता अर्थात् जो आत्मनिर्भर नहीं है उसे जीवन में परेशानियाँ ही झेलनी पड़ती हैं। ईश्वर भी उसी की मदद करता है जो स्वयं की मदद करता है। परोक्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि अपनी सफलता व असफलता के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। आत्मनिर्भर हुए बिना हम अपना जीवन सुखी व अर्थ पूर्ण नहीं बना सकते। परतन्त्रता हमारी सृजनात्मकता व विकास को रोक देती है। जिससे असन्तोष उत्पन्न होता है।

आत्मनिर्भरता का आशय

आत्मनिर्भर होने का अर्थ है अपनी क्षमताओं को जानकर अपने भविष्य को निर्धारित करना। हमारे अन्दर कुछ ऐसी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे हम जिम्मेदारी से निर्णय ले सकें और लोग स्वतः हमसे प्रभावित हों। जीवन के विभिन्न कौशल जैसे – स्वजागरूकता, समस्या हल करना, लक्ष्य निर्धारित करना, निर्णय लेना, सकारात्मक सम्बन्ध बनाना, अच्छा सम्प्रेषण और परस्पर समझौता करना और आक्रामक अथवा निष्क्रिय न बनने की बात सीखना आदि कुशलताएँ हमें आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाती हैं।

सम्मानपूर्ण विद्यार्थी जीवन के साथ में आत्मनिर्भर होना अति आवश्यक है। आत्मानुशासन के द्वारा अपने जीवन के लिए बनाई गई योजनाओं व लक्ष्यों को आगे विकसित किया जा सकता है। आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए सबसे पहला चरण है अपनी क्षमताओं और संसाधनों का आकलन कर लक्ष्य की ओर बढ़ना। अपने अनुभव के आधार पर कमियों—कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करने के प्रयास करते हुए हम निरंतर आत्म निर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं।

क्या मैं आत्मनिर्भर हूँ ?

निर्भरता विभिन्न प्रकार की हो सकती है, जैसे—शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक आदि। आलस्य के कारण जाने अनजाने में किशोर अपने परिजनों पर निर्भर हो जाते हैं। आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का तात्पर्य केवल व्यवसाय से ही नहीं है, अपितु प्रतिदिन होने वाली छोटी-छोटी बातों के लिए भी आत्मनिर्भर होना है। अपने जीवन के विभिन्न चरणों में हमें कई निर्णय लेने पड़ते हैं। जिसके लिये हम अपने परिजन अथवा अपने से उम्र में बड़े व्यक्ति के पास जाते हैं जिनके अनुभवों से हम सीख सकते हैं। किसी बिन्दु पर विचार—विमर्श करना निर्भरता नहीं है, परन्तु असफलता के डर से स्वयं निर्णय नहीं लेना मानसिक निर्भरता का छोटा—सा उदाहरण है। इसी प्रकार हम आर्थिक रूप से पारिवारिक व सामाजिक रूप से भी निर्भर हो सकते हैं। इसी निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर हमें चलना है। स्वस्थ मस्तिष्क, स्वस्थ चेतना एवं आत्मशक्ति आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक बिन्दु हैं।

स्वावलम्बी होना तथा आत्मनिर्भरता एक दूसरे के पर्याय हैं। आर्थिक रूप से सृदृढ़ व्यक्ति, समाज को अपनी पहचान देने में सक्षम होता है और यही पहचान उसकी सामाजिक व पारिवारिक निर्भरता को कम करती है। स्वावलम्बी होने के लिए यदि हम अपने पारिवारिक व्यवसाय को चुनें तो ‘सोने में सुहागा’ वाली कहावत चरितार्थ होगी। उस व्यवसाय को बढ़ाने में हमारी शिक्षा हमें बहुत मदद कर सकती है। जैसे, कृषि के व्यवसाय में यदि कृषि विज्ञान से सम्बन्धित ज्ञान को प्रयुक्त करें, तो उससे हमारी आय और बढ़ जाएगी। यह हमें ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी व्यवसाय छोटा नहीं होता, हमारी सोच छोटी होती है, बड़ईगिरी व नाई के व्यवसाय में भी यदि हम अपनी शिक्षा के द्वारा उसे और आधुनिक बना दें, तो हम पूर्णतः आत्मनिर्भर हो सकते हैं।

मैं आत्मनिर्भर कैसे बनूँ ?

- आत्मनिर्भर होने के लिये हमें स्वयं में जीवन कुशलताओं को बढ़ाना होगा।
- स्वजागरूकता या स्वयं की कमजोरियों और शक्तियों को समझें।

- समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए उपलब्ध विकल्पों का पता लगा कर फैसला करें।
- अल्पकालीन और दीर्घकालीन लक्ष्य निर्धारण करें।
- सोच समझ कर निर्णय लें और जिम्मेदारी स्वीकार करें।
- दूसरों से सकारात्मक सम्बन्ध बनाने की कोशिश करें।
- प्रभावी सम्प्रेषण करें।
- अन्य लोगों के साथ समायोजन करें और परस्पर समझौता करना सीखें।
- उग्र या अकर्मण्य होने से बचें और दूसरों को अपना दृष्टिकोण या कार्य मनवाने के लिए हठ न करें।
- साथी के नकारात्मक दबाव में न आने की कोशिश करें। “ना” कहने की कला सीखें।



चित्र 25.1

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये समय प्रबन्धन के साथ तार्किक एवं सृजनात्मक ढंग से सोचते हुए सतत प्रयास करना चाहिए। व्यावहारिक जीवन अच्छाइयों व बुराइयों का सम्मिश्रण है। आत्मनिर्भरता के लिये इस सच्चाई को स्वीकार करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तीन शब्दों में यदि आत्मनिर्भरता को परिभाषित किया जाए तो हम कह सकते हैं कि जिस विद्यार्थी में संकल्प, चुनौती व नियन्त्रण है, वह आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

जीवन में आत्मनिर्भरता हमें एक सुखद अनुभूति देती है। जहाँ हम आत्मनिर्भर होकर दृढ़ता से अपने निर्णय के बारे में समझा सकते हैं। अपनी सोच के अनुसार जीवन के उद्देश्य निर्धारित कर सकते हैं, आत्मनिर्भर व्यक्ति किसी भी प्रकार के दबाव में कार्य नहीं करता। आत्मनिर्भरता जीवन-कौशल की सार्थकता है, जिससे हम जमाने को बदलने की क्षमता रखते हैं।

स्वरोजगार सम्बन्धी कुछ पाठ्यक्रम

- | | |
|--|---|
| • सिलाई/हैण्ड निटिंग (हाथ की बुनाई) | • EDP – इन्टरप्रेन्योर डबलपमेन्ट प्रोग्राम |
| • खिलौने बनाना | • पॉट डेकोरेशन/ब्लू पॉटरी |
| • ब्यूटी कल्चर | • ऑफिस मैनेजमेन्ट |
| • कम्प्यूटर सम्बन्धी व्यावसायिक जानकारीयाँ | • ब्लॉक प्रिंटिंग |
| • क्राफ्ट वर्क | • पारम्परिक व्यवसाय जैसे— सुनार, लुहार, नाई, मोची इत्यादि |
| • हैण्डमेड पेपर मेकिंग | • कम्प्यूटर नेटवर्किंग |
| • संचार | • फोटोग्राफी |
| • वीडियोग्राफी | • बागवानी |
| • कम्प्यूटर व मोबाइल रिपेयरिंग | • मोटर मैकेनिक |



चित्र 25.2

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- आत्मनिर्भरता ही मनुष्य की उन्नति होती है।
- हमें आत्मनिर्भर होने के लिए जीवन कुशलताओं को बढ़ाना जरूरी है।
- हमें स्वरोजगार को बढ़ावा देना चाहिए।
- आत्मनिर्भरता पारिवारिक और व्यावसायिक स्तर पर हो सकती है।



चित्र 25.3

जानें, समझें और करें

1. निम्नलिखित कहानियों को ध्यान से पढ़ें –

(अ) मेरा एक मित्र दसवीं में पढ़ता है। वह बिना माँ के जगाए उठ नहीं पाता। उसके नाश्ता, दूध व टिफिन के लिए माँ चिन्तित रहती हैं। वह अपनी किताब कॉपियों को भी ठीक से सम्भाल कर नहीं रखता, जिसके कारण उसे स्कूल में डाँट पड़ती है। वह अपने हर काम में माता-पिता की मदद लेता है। एक बार उसके माता-पिता को किसी कारण से शहर से बाहर जाना पड़ा। उसको अकेले घर पर रहने में परेशानी हुई। जिसके कारण उसे उस रात भूखा सोना पड़ा।

(ब) मेरा दूसरा मित्र सुबह जल्दी उठ जाता है। उठकर अखबार पढ़ता है और सुबह की चाय बनाता है। माँ के साथ नाश्ता बनाने में मदद करता है। स्कूल से लौटकर माँ के घर के कामों तथा बाजार से सब्जी वगैरह लाने में मदद करता है। एक बार माँ के बाहर जाने पर उसने पिता के साथ मिलकर खाना बनाया और घर सम्भालने में मदद की। एक दिन माता-पिता कहीं बाहर गये हुए थे। घर पर छोटी बहन को चोट लग जाने पर वह उसे डॉक्टर के पास मरहम पट्टी कराने ले गया।

- आप मेरे कौनसे मित्र जैसा बनना चाहेंगे ?

.....

2. स्वयं सोचें

इस पाठ में कई स्व-रोजगारों की सूची दी गई है। क्या आपको लगता है कि इन में से किसी रोजगार को अपना सकते हैं।

.....

- क्या कोई अन्य रोजगार हैं जिन्हें उक्त सूची में डाल सकते हैं ?

.....

- क्या आप किसी चुनौती को स्वीकार कर इनमें से किसी रोजगार को चुनेंगे ?

.....

- क्या आप महसूस करते हैं कि आप आत्मनिर्भर हैं ?

.....

- क्या आप आत्मनिर्भर होना चाहते हैं ?

.....

- कब आप महसूस करते हैं कि आप आत्मनिर्भर हैं ? अपने आत्मनिर्भर होने के विकल्प पर मार्क लगाइए –
 - सफर करते समय।
 - बाहर का काम करते समय।
 - घर में काम करते समय।
 - पढ़ते समय।
- आत्मनिर्भरता क्यों जरूरी है ?

.....

.....

- क्या आर्थिक रूप से आप आत्मनिर्भर होना चाहते हैं ?

.....

.....

- क्या आप स्वयं निर्णय लेते हैं ? यदि 'हाँ' तो किन बातों में ? यदि 'नहीं' तो क्यों ?

.....

.....

3. उचित विकल्प पर सही का निशान लगाइए –

- आपका किसी स्वरोजगार के लिए तैयार होने के लिए करना चाहिए –
 - (अ) अपनी रुचि के अनुसार किसी रोजगार के लिए जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।
 - (ब) अपने अभिभावकों से पूछ कर व्यवसाय का चयन करना चाहिए।
 - (स) किसी रोजगार संस्थान से सम्पर्क करके रोजगार को सीखना चाहिए।
 - (द) जिस व्यवसाय में अच्छा पैसा मिले उसका चयन करना चाहिए।
- आप आत्मनिर्भर हैं –
 - (अ) अपनी पढ़ाई करने के मामले में।
 - (ब) अपने घर के बाह्य कार्य करने के मामले में।
 - (स) अपने रोजमर्रा के कार्यों को करने के मामले में।
 - (द) किसी भी कार्य में रेलगाड़ी से लम्बी यात्रा करने के मामले में।



चित्र 25.4

“जो हाथों से काम करे – मजदूर, जो हाथों और दिमाग से काम करे – कारीगर, जो हाथ, मस्तिष्क व दिल से काम करे – कलाकार।” – अज्ञात

“शिक्षा सर्वोत्तम होती है, केवल बौद्धिक नहीं अपितु शारीरिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक भी हो और चरित्र का विकास करने तथा जीवन के प्रति निर्भिक एवं स्वावलम्बी दृष्टिकोण बनाये।”

–स्वामी विवेकानन्द